Journal of Socio-Educational & Cultural Research, Vol. 2, No. 5, July-December, 2016 ISSN : 2394-2878

ग्रामीण परिवेश की सामाजिक संरचना में परिवर्तन
हरिद्वार जिले के एक गांव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 अमित मलिक*

भारतीय ग्रामों में परिवर्तन और निरन्तरता की प्रक्रिया साथ साथ पाई जाती है। इसके पश्चात् भी यह सच है कि ग्रामीण संरचना में आज अनेक ऐसी विशेषताएं उत्पन्न हुई हैं, जो इनके परिवर्तित स्वरूप को स्पष्ट करती हैं। सामान्य अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीणों की मनोवृत्तियों तथा उनके मूल्यों में आज व्यापक परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा के प्रसार के कारण ग्रामीणों में भाग्यवादिता का प्रभाव कम हुआ है और यह विश्वास धीरे–धीरे विकसित हो रहा है कि व्यक्ति परिश्रम के द्वारा अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दशाओं को बदल सकता है। इस मनोवृत्ति के फलस्वरूप ग्रामीण सामाजिक प्रतिमान जो पहले परम्परा और धार्मिक मूल्यों से सम्बद्ध थे। अब लौकिक तथा व्यक्तिवादी बनते जा रहे हैं। इसके पश्चात् भी ग्रामीण संरचना से सम्बद्ध परिवर्तनों को देखते समय यह ध्यान अवश्य रखना पड़ेगा कि ग्रामीण जीवन में महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन हुए हैं। जिनका एक साधनात्मक महत्व है। दूसरा तथ्य यह है कि ग्रामों में व्यक्ति की मनोवृत्तियों में होने वाले परिवर्तन अभी उनके वास्तविक व्यवहारों को बदलने में अधिक प्रभावपूर्ण नहीं हो सके हैं। संरचनात्मक दृष्टिकोण से आज ग्रामीण परिवार संक्रमण की स्थिति में है। औद्योगिकरण तथा नगरीकरण के प्रभाव से ग्रामीण संयुक्त परिवारों के आकार तथा स्तरीकरण में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। बहुत से नए व्यवसायों में वृद्धि हो जाने के कारण आज गाँवों के बहुत से लोग नगरों में जाकर रहने लगे हैं। आज नई पीढी की अधिकांश स्त्रियाँ अपने को संयुक्त परिवार से समायोजित करने में कठिनाई अनुभव करती हैं। इसके फलस्वरूप ग्रामीण संयुक्त परिवारों की स्थिरता और आचरण के मानदण्ड दुर्बल पड़ते जा रहे हैं। जाति व्यवस्था के नियम एक लम्बे समय तक ग्रामीण सामाजिक संरचना का सबसे महत्वपूर्ण आधार थे। समय के साथ इस संस्था में भी अब परिवर्तन के तत्व स्पष्ट होने लगे हैं। वर्तमान जीवन में जाति एक नैतिक संस्था न रहकर एक राजनैतिक तथा स्थानीय संस्था का रूप धाारण करती जा रही है। जाति व्यवस्था का राजनीतिकरण हो जाने के फलस्वरूप इसे गुटवाद के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा है। परम्परागत ग्रामीण सामाजिक संरचना आत्मनिर्भरता की विशेषता से युक्त थी। एक आत्मनिर्भर इकाई के रूप में व्यक्ति अपनी सभी प्रमुख आवश्यकताएं अपने गाँव के अंदर ही पूरी कर लेता था। आज व्यवसाय तथा मनोवृत्तियों से सम्बन्धित परिवर्तनों के प्रभाव से प्रत्येक गाँव के लोग अपने गाँव की सीमा से बाहर के गाँवों और क्षेत्रों पर निर्भर होते जा रहे हैं। इसके फलस्वरूप एक ओर उनके सामुदायिक और मानसिक तनाव पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ गए हैं। जहाँ तक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सम्बन्ध है। आज इसमें भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। कृषि के आधुनिकीकरण तथा मशीनीकरण, नई प्रकार की खादों और बीजों के उपयोग तथा नवीन विपणन प्रणाली के प्रभाव से कृषक अब ऐसी फसलों में अधिक रूचि लेने लगे हैं। अन्य अनेक क्षेत्रों में उत्पन्न परिवर्तनों ने भी ग्रामीण सामाजिक संरचना को काफी प्रभावित किया है। गाँवों में आज मनोरंजन तथा व्यवसायिक साधनों का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसके फलस्वरूप ग्रामीण चिंतन तथा ग्रामीण मनोवृत्तियाँ नए परिवेश ग्रहण करने लगी हैं। ग्रामीण सामाजिक संरचना को वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था ने भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। वास्तविकता तो यह है कि आज सम्पूर्ण ग्रामीण संरचना का राजनीतिकरण हो चुका है। वर्तमान युग में सामूहिक निर्णयों तथा नीति निर्धारण के क्षेत्र जाति तथा धर्म का स्थान उतना महत्वपूर्ण नहीं रहा जितना बहुमत का नई मतदान प्रणाली के प्रभाव से गाँवों में गुटबंदी, व्यक्तिगत स्वार्थ, संघर्षों तथा सत्ता से सम्बन्धित समस्याओं में वृद्धि हुई है।

ग्रामीण सामाजिक संरचना में होने वाले उपरोक्त परिवर्तनों को देखने के लिए उत्तराखण्ड राज्य के हरिद्वार जनपद के ब्रह्मपुर गाँव को चुना गया। यह गांव राष्ट्रीय राजमार्ग–58 पर पड़ने वाले गुरूकुल नारसन से पाँच किमी0 पूरब में स्थित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए गाँव से विभिन्न जातियों, विभिन्न आयु समूहों, विभिन्न व्यवसायिक समूहों, विभिन्न शिक्षा स्तर वाले समूहों से 50 उत्तरदाताओं को चुना

*

गया है। यह अन्वेषाणात्मक अध्ययन कार्य 10 फरवरी से मार्च 2016 तक ब्रह्मपुर गाँव में सम्पन्न किया गया है। इसका उद्देश्य गाँव की सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना है। इस शोध अध्ययन में साक्षात्कार तथा अनुसूची को मुख्य तकनीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

इस अध्ययन कार्य में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्न प्रश्नों का सहारा लिया गया है :–

1. आपके परिवार का प्रकार कैसा है ? संयुक्त अथवा एकांकी
2. क्या जाति व्यवस्था राजनीतिक गुटबाजी के रूप में कार्य कर रही है ?
3. क्या आप अपने परम्परागत व्यवसाय को कर रहे हैं ?
4. क्या आप ग्रामीण स्तर पर अपने आपको आत्मनिर्भर मानते हैं ?
5. क्या आप मनोरंजन एवं ज्ञानवृद्धि के लिए टीवी, अखबार आदि साधनों का प्रयोग करते हैं।
6. क्या आप अपने बच्चों को पढ़ाकर अन्य व्यवसाय कराना चाहते हैं ?

निष्कर्ष

यह अध्ययन कार्य ब्रह्मपुर गाँव में 10 फरवरी से 10 मार्च 2016 तक साक्षात्कार तथा अनुसूची के माध्यम से सम्पन्न किया गया। इस अध्ययन में हम निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :––

1. 72 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार का प्रकार एकांकी है। जबकि 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार ही संयुक्त परिवार हैं।
2. 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि जाति व्यवस्था राजनीतिक गुटबाजी के रूप में कार्य कर रही है, जबकि 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि जाति व्यवस्था अभी भी अपने परम्परागत कार्य कर रही है।
3. 57 प्रतिशत उत्तरदाता अभी भी अपने परम्परागत व्यवसाय में लगे हैं, जबकि 43 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने जातिगत व्यवसायों में परिवर्तन कर लिया है।
4. 82 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि अब ग्रामीण जीवन भी आत्मनिर्भर नहीं रहा है, क्योंकि आवश्यकताएं बढ़ गयी हैं और उनके लिए शहरों पर निर्भरता बढ़ रही है। दूसरी ओर 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि अभी भी ग्रामीण जीवन आत्मनिर्भर है।
5. 78 प्रतिशत उत्तरदाता मनोरंजन एवं ज्ञानवृद्धि के लिए टीवी, अखबार आदि का प्रयोग करते हैं, जबकि 22 प्रतिशत उत्तरदाता अभी भी परम्परागत रागिनी, भजन, चौपालों आदि के माध्यम से अपना मनोरंजन करते हैं।
6. 90 प्रतिशत उत्तरदाता चाहते हैं कि उनकी अगली पीढ़ी अपने व्यवसाय को छोड़कर अच्छे व्यवसाय को अपनाए। वहीं 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उनका पैतृक व्यवसाय ही उचित है।

सारांश

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामों की सामाजिक संरचना के आधार व्यवसाय, विवाहों के प्रतिबंध, संयुक्त परिवारों का विघटन, टीवी, रेडियो, अखबार आदि का बढ़ता प्रचलन आदि में परिवर्तन देखे जा सकते हैं। इन परिवर्तनों के कारण ग्रामीण समाजों की संरचना में परिवर्तन स्पष्ट देखे जा सकते हैं। ग्रामीण समाज में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि कौन से व्यवसाय उनके लिए सामाजिक एवं आर्थिक रूप से आधिक लाभप्रद है और इसी आधार पर व्यक्ति आत्मनिर्भरता धीरे–धीरे समाप्त हो रही है। आवश्यकताएं बढ़ने के साथ साथ ग्रामीण आत्मनिर्भरता भी कम हो रही है।

संदर्भ सूची :

1- Social Structure/Britanniea.com www.britanniea.com/topic/social structure
2- Social Structure and change in a U.P. Village :- www.epw.in/system/.../social structure and change in a up village published by M.K. Marriot.
3- Dynamics of Social Structure and Culture :- http://books.google.co.in/books? ISBN=8186565876.
4- Village community in India :- cooperative movement in India .... www. sociologyguide.com Rural sociology.

●